



विचार प्रवाह

संपादकीय

दिल्ली में घुसपैठिए वोटर

क्या राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के विधानसभा चुनाव में 20 लाख से रोहिंग्या और बांगलादेशी घुसपैठिए हैं? यदि है, तो राष्ट्रीय सुरक्षा से खिलबाड़ करने की दोषी और जावाबदी की है? क्या लाखों अवैध राजनीतिकों को, सिर्फ चुनाव के महेनजर, राजनीतिक संरक्षण दिया जाना संभव है? क्या भारत सरकार और सीमाओं पर तैनात सुरक्षा बलों ने अखेर मूर रखी है? ऐसे कई सवाल दस्ते सवाल हैं। दिल्ली की घुसपैठियों की धर्मशाला नहीं बनाया जा सकता। जब बरलाला ग्रामीण राजनीतिकों को जो शोध-पट जारी की है, वेशक उत्ते पूर्ण सत्य न माना जाए, लेकिन घुसपैठियों को मुदा तो पुराना है। इस रपट को नकारा भी नहीं जा सकता, क्योंकि यह राष्ट्रीय सुरक्षा का मामला है। चुनाव आयोग ने सभी दृष्टिकोण से सुनिश्चित करने और क्रांस चौकिंग के बाद जो अंतिम मतदाता सूची तैयार की है, तथा उसमें करीब 20 लाख घुसपैठियों के नाम भी दर्ज हैं। इस अवैध मतदाता से न केवल हमारी चुनाव-प्रणाली प्रभावित होगी, बल्कि दिल्ली की जनसंख्या के समीकरण भी बदल रहे हैं। यहाँ की 84 फीसदी हिंदू आबादी घट कर 8.1% फीसदी हो गई है, जबकि अमीर आबादी 5.7% फीसदी भी, जो बढ़कर करीब 13 फीसदी हो गई है। एक खत्तरनक बदलाव है। सवाल यह है कि घुसपैठिए बदलाव बने, उत्ते सभी सरकारी संसाधन और सुविधाएं भी तो पुराना है। इस रपट को नकारा भी नहीं जा सकता, तर्हांसे यह राष्ट्रीय सुरक्षा का मामला है।

दिल्ली को घुसपैठियों की धर्मशाला नहीं बनाया जा सकता।

जवाहरलाल नेहरू

विश्वविद्यालय से 114 पन्नों की जो शोध-पट जारी की है,

बेशक उत्ते पूर्ण सत्य न माना जाए, लेकिन घुसपैठियों को मुदा तो पुराना है। इस रपट को नकारा भी नहीं जा सकता, तर्हांसे यह राष्ट्रीय सुरक्षा का मामला है।

चुनाव आयोग ने सभी दृष्टिकोण से सुनिश्चित करने और क्रांस चौकिंग के बाद जो अंतिम

मतदाता - सूची तैयार की है, तथा

उसमें करीब 20 लाख घुसपैठियों के नाम भी दर्ज हैं। इस अवैध

मतदाता से न केवल हमारी

चुनाव-प्रणाली प्रभावित होगी,

बल्कि दिल्ली की जनसंख्या के

समीकरण भी बदल रहे हैं। यहाँ

की 84 फीसदी हिंदू आबादी घट

कर 81.7 फीसदी हो गई है,

जबकि मुस्लिम आबादी 5.7

फीसदी भी, जो बढ़कर करीब 13

फीसदी हो गई है यह खत्तरनाक

बदलाव है। सवाल यह है कि घुसपैठियों के नाम भी जोर दर्ज हैं। इस

अधिक घुसपैठियों के नाम भी जोर दर्ज हैं। इस

अवैध मतदाता से न केवल हमारी

चुनाव आयोग ने सभी दृष्टिकोण

से सुनिश्चित करने और क्रांस

चौकिंग के बाद जो अंतिम

मतदाता - सूची तैयार की है, तथा

उसमें करीब 20 लाख घुसपैठियों

के नाम भी दर्ज हैं। इस

अवैध

मतदाता से न केवल हमारी

चुनाव-प्रणाली प्रभावित होगी,

बल्कि दिल्ली की जनसंख्या के

समीकरण भी बदल रहे हैं। यहाँ

की 84 फीसदी हिंदू आबादी घट

कर 81.7 फीसदी हो गई है,

जबकि मुस्लिम आबादी 5.7

फीसदी भी, जो बढ़कर करीब 13

फीसदी हो गई है यह खत्तरनाक

बदलाव है। सवाल यह है कि घुसपैठियों के नाम भी जोर दर्ज हैं। इस

अधिक घुसपैठियों के नाम भी जोर दर्ज हैं। इस

अवैध

मतदाता से न केवल हमारी

चुनाव आयोग ने सभी दृष्टिकोण

से सुनिश्चित करने और क्रांस

चौकिंग के बाद जो अंतिम

मतदाता - सूची तैयार करता है। जबकि उत्ते पूर्ण सत्य न माना जाए, लेकिन घुसपैठियों को मुदा तो पुराना है। इस रपट को नकारा भी नहीं जा सकता, तर्हांसे यह राष्ट्रीय सुरक्षा का मामला है। चुनाव आयोग ने सभी दृष्टिकोण से सुनिश्चित करने और क्रांस चौकिंग के बाद जो अंतिम

मतदाता - सूची तैयार करता है। जबकि उत्ते पूर्ण सत्य न माना जाए, लेकिन घुसपैठियों को मुदा तो पुराना है। इस रपट को नकारा भी नहीं जा सकता, तर्हांसे यह राष्ट्रीय सुरक्षा का मामला है।

वेरोजगारी का बड़ा कारण है। रपट में बताया गया है कि फीसदी दरावर्जन बनाने को फर्जी घुसपैठियों के लिए एक घुसपैठियों के नाम भी जोर दर्ज है। यह भी घुसपैठियों के नाम भी जोर दर्ज है। इस

अवैध

मतदाता से न केवल हमारी

चुनाव-प्रणाली प्रभावित होगी,

बल्कि दिल्ली की जनसंख्या के

समीकरण भी बदल रहे हैं। यहाँ

की 84 फीसदी हिंदू आबादी घट

कर 81.7 फीसदी हो गई है,

जबकि मुस्लिम आबादी 5.7

फीसदी भी, जो बढ़कर करीब 13

फीसदी हो गई है यह खत्तरनाक

बदलाव है। सवाल यह है कि घुसपैठियों के नाम भी जोर दर्ज हैं। इस

अधिक घुसपैठियों के नाम भी जोर दर्ज हैं। इस

अवैध

मतदाता से न केवल हमारी

चुनाव-प्रणाली प्रभावित होगी,

बल्कि दिल्ली की जनसंख्या के

समीकरण भी बदल रहे हैं। यहाँ

की 84 फीसदी हिंदू आबादी घट

कर 81.7 फीसदी हो गई है,

जबकि मुस्लिम आबादी 5.7

फीसदी भी, जो बढ़कर करीब 13

फीसदी हो गई है यह खत्तरनाक

बदलाव है। सवाल यह है कि घुसपैठियों के नाम भी जोर दर्ज हैं। इस

अधिक घुसपैठियों के नाम भी जोर दर्ज हैं। इस

अवैध

मतदाता से न केवल हमारी

चुनाव-प्रणाली प्रभावित होगी,

बल्कि दिल्ली की जनसंख्या के

समीकरण भी बदल रहे हैं। यहाँ

की 84 फीसदी हिंदू आबादी घट

कर 81.7 फीसदी हो गई है,

जबकि मुस्लिम आबादी 5.7

फीसदी भी, जो बढ़कर करीब 13

फीसदी हो गई है यह खत्तरनाक

बदलाव है। सवाल यह है कि घुसपैठियों के नाम भी जोर दर्ज हैं। इस

अधिक घुसपैठियों के नाम भी जोर दर्ज हैं। इस

अवैध

मतदाता से न केवल हमारी

चुनाव-प्रणाली प्रभावित होगी,

बल्कि दिल्ली की जनसंख्या के

समीकरण भी बदल रहे हैं। यहाँ

की 84 फीसदी हिंदू आबादी घट

कर 81.7 फीसदी हो गई है,

जबकि मुस्लिम आबादी 5.7

फीसदी भी, जो बढ़कर करीब 13

फीसदी हो गई है यह खत्तरनाक

बदलाव है। सवाल यह है कि घुसपैठियों के नाम भी जोर दर्ज हैं। इस

